

आये सन्त अनन्त दया करके जिन दरस से पाप जरे छिन में।
उर के तम तूम मिटावत है प्रकाश करे रवि ज्यों दिन में॥
जग प्रीति छुड़ाय हरी सों मिलाय रस प्रेम भरे सबके मन में।
जग जंगम तीर्थ संत सही इक बृह्म लखे जड़ चेतन में॥
भव वारिधि बोहिथ है जग में जिनके पद कंज महा सुखदाई।
कोटिनि पतित पुनीत किये प्रभु सत्य कथा गंग धार बहाई॥
घन मण्डल ज्यों महि मण्डल में हरी नाम सुध वर्षा वर्षाई।
आये बृज में करि यात्रा पूर्ण साई मैया दें वाधाई वाधाई॥
कर पावन पूर्व प्रान्त सबै फिर दक्षण जाय पुनीत बनाए।
पश्चिम वासिनि नाम रटाय पुनि उत्तर के जीवनि अपनाए॥
चारों दिशा रस सौं भरके जड़ चेतन को सद् पंथ लखाए।
बृज धाम वसें सुख सों विलसें हुलसें साई घर आए॥
आज हमारे हैं भाग्य जगे प्रेम पाहुने सन्त पुनीत भए हैं।

कर दर्शन नैनों को चैन मिला मन प्राण प्रभू रस रंग रए हैं॥
कृपा जगदीश भई अतिहीं सत्संगति को सुख आन दए हैं।
सन्त सहाई भए जिनके तिनही जग जीवन लाह लए हैं॥